NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

मेथी की वैज्ञानिक खेती

[1]शैलेन्द्र कुमार, [2]मोनालिसा पांडा, [3]नरेंद्र कुमार, [4]लालू प्रसाद, [5]बद्री लाल नागर

परिचय:

मेथी पत्तेदार सब्जियों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसकी पत्तियांऔर फलियां भी सब्जी के रूप में उपयोग किया। तथा इसके सूखे दानों का प्रयोग मसाले मे सब्जी छोकने के रूप में अचार एवं औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। पोषक दृष्टि से इसमें प्रोटीन वसा रेशा कार्बोहाइड्रेट खनिज पदार्थ एवं विटामिन ए बी सी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। और इसका उत्पत्ति स्थान भारत के उत्तर पश्चिमी भागों में प्राचीन समय से उगती देखी जा रही है इसके बावजूद भी उत्पत्ति पूर्वी यूरोप तथा इथोपिया से भी मानी जाती है। भारत में यह। मुख्य रूप से मध्य प्रदेश गुजरात उत्तर प्रदेश में उगाई जाती है।

आहार मूल्य-

- नमी-86.1 ग्राम /100ग्राम
- कार्बोहाइड्रेट-6.00 ग्राम /100ग्राम
- प्रोटीन4.4 ग्राम /100ग्राम
- वसा-0.9 ग्राम /100ग्राम
- रेशा-1.1 ग्राम /100ग्राम
- खनिजपदार्थ-1.5 ग्राम /100ग्राम
- फास्फोरस-51.1 ग्राम /100ग्राम
- विटामिनसी- 52 ग्राम /100ग्राम
- लोहा-16.5 ग्राम /100ग्राम
- सल्फर-167 ग्राम /100ग्राम

[1]शैलेन्द्र कुमार, [2]मोनालिसा पांडा, [3]नरेंद्र कुमार, 4लालू प्रसाद, [5]बद्री लाल नागर

[1]शोध छात्र आर पी सी यू पूसा समस्तीपुर (बिहार)

[2]शोध छात्रा उड़ीसा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (उड़ीसा)

[3]इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर (छत्तीशगढ़)

[4]शोध छात्र सब्जी विज्ञान विभाग आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

[5]शोध छात्र आर, वी, एस,के,वी,वी ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

- क्लोरीन-165 ग्राम /100ग्राम
- सोडियम-76.1
- मैग्नीशियम-67.0 ग्राम /100ग्राम आदि पाया जाता है

जलवायु- यह जाड़े वाली फसल है इसको वृद्धि के लिए लंबे ठंडे मौसम की आवश्यकता होती है यह पाले से प्रति अवरोधी होती है।

भूमि- मेथी की खेती के लिए अच्छी प्रकार की दोमट भूमि सर्वोत्तम रहती है तथा यह मटियार दोमट भूमि में भी खेती की जा सकती है भूमि तैयार करते समय 1 जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करने के बाद 4-5 देशी हल से करके खेत अच्छी तरह तैयार कर लेते हैं।

बुवाई का समय और बीज की मात्रा- इसकी बुवाई उत्तर भारत में सितंबर से नवंबर तक करते हैं तथा पत्तियां प्राप्त करने हेतु फरवरी माह में बोया जाता है तब और पहाड़ी क्षेत्र में इसकी बुवाई मार्च-अप्रैल में करते हैं जबकि कसूरी मेथी की बुवाई अक्टूबर में करते हैं तथा इसके लिए 20 से 25 किलो बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होता है और कसूरी मेथी के लिए 20 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टर पर्याप्त होता है।

बोने का ढंग -मेथी को सामान्यता दो प्रकार से बोया जाता है। छिटकवा विधि। इस विधि में अच्छी उपज प्राप्त नहीं होती है।

कतारों में बुवाई विधि- इस विधि में (20 ×10) दूरी पर। बीज की बुवाई करते हैं। बुवाई (7-8)दिनों बाद अंकुरण हो जाता है और बीज को रिजोबियम कल्चर से उपचारित करके ही बोया जाता है।

प्रजातियां- मेथी में दो प्रकार की प्रजातियां पाई जाती है देसी प्रजातियां। इसमें मुख्य रूप से पूसा अर्ली बंचिंग टाइप -226 सी एम 960 आति हैं जिनसे अधिक उपज प्राप्त होती है।कसूरी प्रजातियां। इन प्रजातियों की बढ़वार धीमी होती है तथा तना गुछेदार होता है फूल चमकीला पीला रंग का होता है फलिया छोटी मुड़ी हुई होती हैं और इसमें मुख्य रूप से लैक्सन वैरायटी आती है।

मेथी की नवीनतम किस्में- कोयंबटूर - 1राजेंद्र क्रांति आर एम टी- 1 लाम सिलेक्शन1हिसार सोनाली।

खाद एवं उर्वरक- गोबर की खाद 200 से 300 कुंतल प्रति हेक्टेयर तथा नत्रजन 40 किलोग्राम फास्फोरस 40 किलोग्राम पोटाश 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर प्रयोग करते हैं गोबर या कंपोस्ट खाद जुताई के समय खेत में मिला देनी चाहिए नत्रजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस पोटाश की पूरी मात्रा अंतिम जुताई के समय कूड में डाल देना चाहिए।

सिंचाई- अंकुरण के समय पर्याप्त नमी होना चाहिए यदि नमी की कमी होती है तो एक हल्की सिंचाई बोने के तुरंत बाद कर देनी

चाहिए तथा 15 दिन के अंतर पर सिंचाई करते रहना चाहिए।

निकाई गुड़ाई- आवश्यकता अनुसार समय-समय पर निकाय गुडाई करने से उपज अधिक प्राप्त होती है दूसरी सिंचाई के बाद जब मिट्टी गीली ना हो तो हल्की गुड़ाई कर देना लाभदायक होता है।

कटाई-मेथी बुवाई के 3 से 4 सप्ताह बाद प्रथम कटाई के लिए तैयार हो जाती है बाद में फूल आने तक 15 दिन के अंतर से इसकी कटाई की जाती है।

उपज- देसी किस्मों से उपज 70 से 80 कुंटल प्राप्त होती है जबकि कसूरी मेथी से प्रति हेक्टेयर 90 से 100 कुंटल उपज प्राप्त होती है।

बीज उत्पादन- यदि मेथी को बिना कटे बढ़ते देना चाहिए तब उपज अधिक प्राप्त होती है। वैसे तो कसूरी मेथी को दो बार तथा सामान मित्र को 3 बार काट कर ही बीज लेने के लिए छोड़ा जाता है सामान्य मेथी से 1200-1500 किलोग्राम तथा कसूरी मेथी से 700 किलोग्राम बीज प्राप्त होता है। और यह बीज सामान्य मेथी से 155 दिन बाद तथा कसूरी मेथी से 165 दिनों बाद तैयार हो जाती है।

कीड़े मकोड़े

माहू- शिशु पत्तियों का रस चूसते हैं जिससे पत्तियां पीली पड़ जाती है तथा एक प्रकार का चिपचिपा पदार्थ भी छोड़ता है इसकी रोकथाम के लिए फॉलीडोल 0.04% अथवा 0.1% मेटासिस्टॉक्स का प्रयोग करना चाहिए।

बीटिल -इसका प्रौढ़ तथा सूडिया दोनों ही पौधों को नुकसान पहुंचाते हैं ग्रसित पौधों की पत्तियों सूख जाती हैं किसके नियंत्रण के लिए मेटासिस्टॉक्स का प्रयोग करते हैं।

जैसिड -इसके नियंत्रण के लिए निकोटिन सल्फेट का छिड़काव करना चाहिए या मेलाथियान 25 ई सी के 2 लीटर मात्रा को 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए आवश्यकता पड़ने पर 8 से 10 दिन के अंतर पर दूसरा छिड़काव करना चाहिए फसल में जैसिड तथा माहू के बचाव के लिए 0.1% मेटासिस्टॉक्स के घोल का 15 दिन के अंतर पर छिड़काव करना चाहिए।

बीमारियां-

फ्यूजेरियम रॉट- यह अधिक हानिकारक है इससे उपज पर प्रभाव पड़ता है इसके नियंत्रण के लिए मरक्यूरिक क्लोराइड का प्रयोग 1% करते हैं जो कि अधिक लाभकारी है।

मिल्ड्यू **पाउडरी-** इसकी पत्तियों एवं तने पर सफेद धब्बे हो जाते हैं इसके नियंत्रण के लिए कैराथन का प्रयोग करतेहैं।

डाउनी ***मिल्ड्यू*** - इसमें पत्तियों के ऊपर पीला या लाल धब्बा पड़ जाता है इसके नियंत्रण के लिए बोर्डेक्स मिश्रण का छिड़काव करते है।